बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य

डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

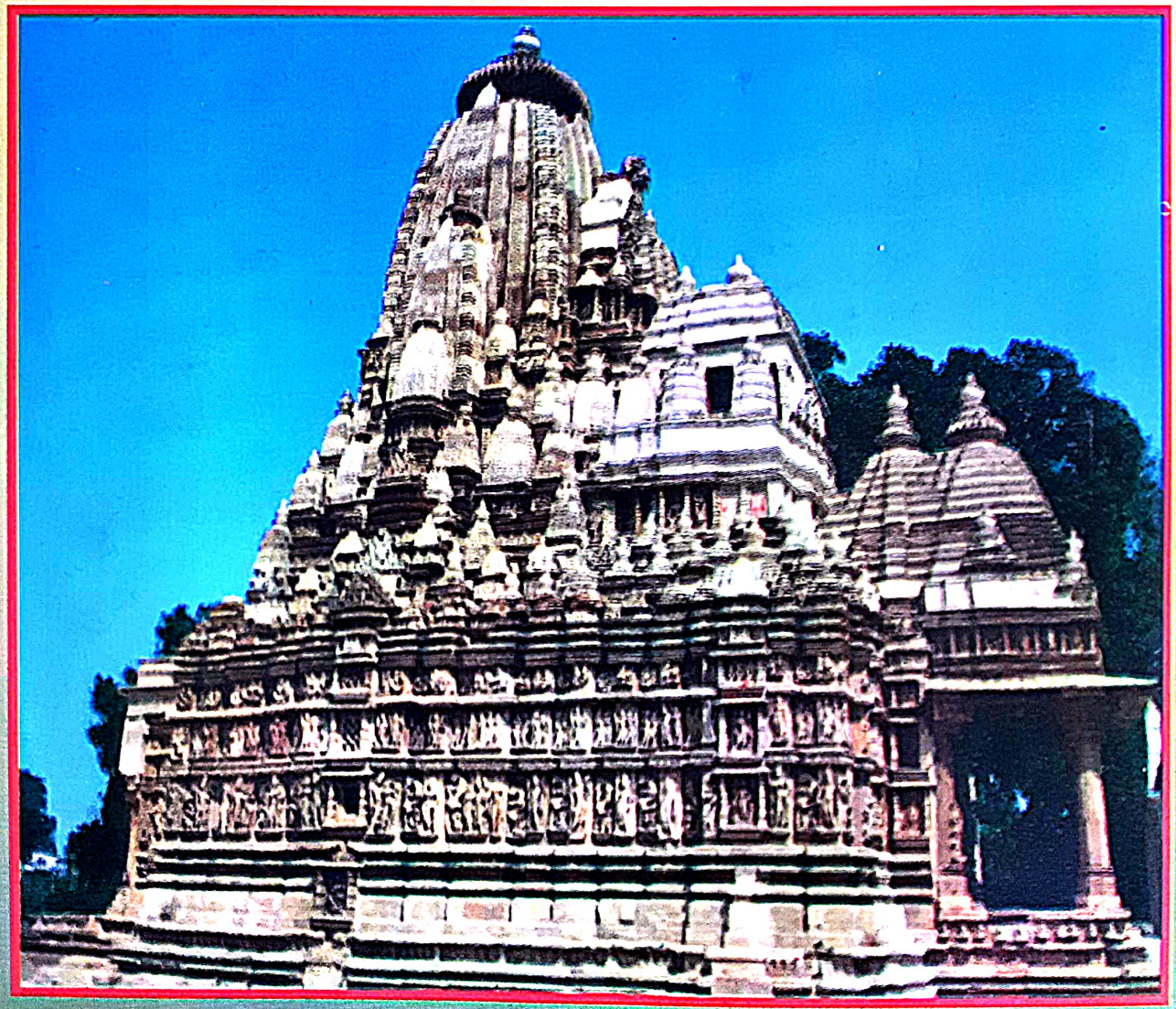

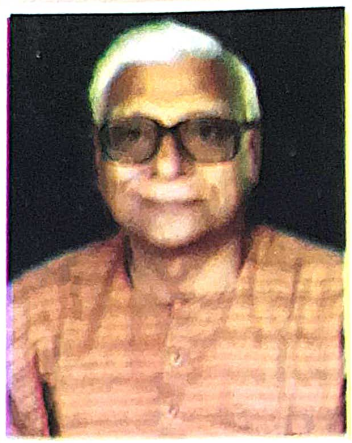

नाम : डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
जन्म स्थान: भौंरी (जिला बांदा–अब चित्रकूट, उ0प्र0)।
जन्मतिथि : 6 फरवरी, 1937।
सेवा : म0प्र0 के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य। स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31–12–1996 को सेवानिवृत्त।
योग्यता : एम.ए. (हिन्दी), पी.एच–डी. (सन्–1964) जबलपुर विश्वविद्यालय, विषय– हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार।
कृतियाँ : (1) हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार, (2) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, (3) आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, (4) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, (5) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकर (शोध निबंधों का संग्रह), (6) चिंतन– अनुचिंतन (समीक्षात्मक निबंध), (7) हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामा चरित्र (संपादन), (8) वीर विलास (आल्हा संबंधी प्राचीनतम पांडुलिपि) (संपादन), (9) अरमान वर पाने का (व्यंग्य लेखों का संग्रह), (10) निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य लेखों का संग्रह), (11) अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य संग्रह), (12) कर्म और आराधना (चिंतनपरक आलेख), (13) रचना से रचना तक (समीक्षात्मक लेखों का संग्रह), (14) तुलसी के तेवर, (15) रस विलास (संपादन), (16) मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, (17) कभी–कभी यह भी (काव्य संग्रह), (18) नारी : एक अध्ययन, (19) बुंदेली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (संपादन), (20) मानस मनीषा (संपादन), (21) रूपक और साक्षात्कार, (22) विंध्यालोक (संपादन), (23) लोक वाटिका, (24) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग, (25) रचना अनुशीलन (समीक्षा), (26) सृजन–विमर्श (समीक्षा), (27) खरी–खरी (काव्य), (28) संवाद : साहित्यकारों से, (30) मध्यकालीन काव्य।
शोध निर्देशन : 12 शोध छात्रों को मेरे निर्देशन में पी.एच–डी. की उपाधि प्राप्त।

बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य

डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

प्रकाशन
सन्दर्भ प्रकाशन

ISBN : 978-81-907057-9-0

प्रकाशक : सन्दर्भ प्रकाशन
110/2, नई बस्ती, अलोपीबाग
इलाहाबाद (उ0प्र0)

लेखक : डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
छतरपुर (म0प्र0)

संस्करण : प्रथम, 2014

मूल्य : 250/- (दो सौ पचास रुपये) मात्र

मुद्रक : भार्गव आफसेट
बाई का बाग, इलाहाबाद (उ0प्र0)

BUNDELKHAND KA SAHITYIK AVAM SANSKRITIK PARIDRISHYA
—DR. GANGA PRASAD GUPTA 'BARSAINYA'

अनुक्रमणिका

1.	दो शब्द : संग्रह के सम्बन्ध में	5
2.	आल्हगाथा के रचयिता कवि जगनिक और परमाल रासो	9
3.	बुन्देली का प्राचीन साहित्य और साहित्यकार	33
4.	दीवान प्रतिपाल सिंह और उनका बुन्देलखंड का इतिहास	47
5.	बुंदेली के रचनाकार ग्रंथ : बुंदेली रचनाकारों का विश्वकोष	53
6.	लोक ईसुरी का धार्मिक एवं दार्शनिक चिन्तन	58
7.	लोककवि ईसुरी की फागों में सराबोर राधा–कृष्ण	71
8.	बुन्देली लोकगीतों में रामकथा	77
9.	बुन्देली कविया में व्यंग्य	91
10.	डोलते–बोलते पाषाण–खजुराहो	95
11.	अहार और खजुराहो के मंदिरों में गहोइयों का योगदान	99
12.	क्या गहोई और जैन कभी एक थे ?	108
13.	मैथिलीशरण गुप्त और उनकी 'भारत भारती'	115
14.	श्री सियारामशरण गुप्त	123

दो शब्द : संग्रह के सम्बन्ध में

किसी क्षेत्र विशेष की पहचान उसकी कला, साहित्य, संस्कृति और इतिहास से होती है। बुंदेलखंड इस दृष्टि से अत्यंत समर्थ और सम्पन्न रहा है। उसकी संस्कृति भारतवर्ष की प्राचीनतम संस्कृतियों में परिगणित की जाती है। साहित्य और साहित्यकारों के लिए बुन्देली–बसुन्धरा अत्यंत उर्वरा मानी गई है। यह अवश्य है कि अपनी दुर्गमता के कारण विकास और व्यापकता के अधिक अवसर न मिलने से यह कई मायनों में अपने में सिमट कर ही रह गया। प्रतिभाओं और सर्जनाओं ने समय–समय पर अपना दायित्व अवश्य निभाया किन्तु प्रकाशन और आकलन अपेक्षाकृत कम हुआ। इसीलिए उसकी पहचान पूरी तरह उजागर न हो सकी। टुकड़ों–टुकड़ों में काम होता रहा। संग्रह के सभी आलेख बुंदेलखंड की भाषा–साहित्य, संस्कृति और इतिहास आदि से संबंधित हैं, किसी एक पक्ष या विषय से नहीं। इसीलिए संग्रह का नाम दिया गया हैं– बुंदेलखंड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य।

बुंदेलखंड की भाषा बुंदेली है। लोकगाथा काव्य आल्हा बुंदेली का प्राचीनतम ग्रंथ है और उसके रचियता जगनिक बुंदेली के प्रथम कवि। संग्रह के प्रथम दो आलेख बुंदेली की प्राचीनता और उसके कृतिकारों से संबंधित हैं। बुंदेलखंड का प्रथम इतिहास दीवान प्रतिपाल सिंह ने लिखा था जो लगभग 90 वर्ष बाद बारह खंड़ों में अब प्रकाशित हुआ है। 'बुंदेली के रचनाकार' में 560 बुंदेली कृतिकारों का परिचय दिया गया है। इतिहास और रचनाकारों की दृष्टि से दोनों आलेख महत्वपूर्ण हैं। इतनी जानकारी अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। ईसुरी बुंदेली के सर्वाधिक लोकप्रिय समर्थ कवि हैं जिन्हें 'बुन्देली का विद्यापति' कहा गया। 'ईसुरी की ख्याति'

श्रृंगार कवि के रूप में प्रमुखतः है। इसमें शक नहीं कि श्रंगार की भाव–भंग्माओं, मनोदशाओं का जैसा चित्रण ईसुरी ने किया है, वैसा बहुत कम कवि कर पाये हैं। किन्तु ईसुरी मात्र श्रृंगारी कवि नहीं हैं। उनकी बुंदेली की चौकड़िया फागों में धार्मिक और दार्शनिक पक्ष भी कमजोर नहीं है। ईसुरी संबंधी लेख में ईसुरी के इसी पक्ष को रेखांकित किया गया है। साथ ही बुंदेली लोकगीतों में रामकथा, बुंदेली कवियों में व्यंग्य तथा बुंदेली लोककथा संबंधी आलेख भी हैं ताकि सभी पक्षों की थोड़ी–थोड़ी बानगी मिल सके। कुछ आलेख बुंदेली भाषा में हैं।

बुंदेलखंड में जैन मंदिरों का बाहुल्य है किन्तु यह जानकारी नहीं है कि इन मंदिरों के निर्माण में गहोई वैश्यों का भी योगदान है। पहली बार इससे संबंधित तथ्य इस संग्रह में प्रस्तुत किये गये हैं। यही नहीं, जैनियों और गहोइयों के मध्य एकता के सूत्रों की भी तलाश की गई है।

मैथिलीशरण गुप्त बुन्देली वसुन्धारा के ऐसे अनूठे रत्न हैं जिन्होंने लगभग साठ ग्रथों से न केवल माँ भारती का भण्डार भरा अपितु संसद सदस्य के रूप में राज्यसभा को भी सुशोभित किया तथा देश के प्रथम राष्ट्रकवि बनकर समग्र बुन्देलखण्ड को गौरवान्वित किया। स्वतंत्रता–संग्राम में तहलका मचानेवाली उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति 'भारत–भारती' की शताब्दी सन् 2012 में मनाई गई थी। उनके अनुज सियारामशरण गुप्त का अवदान कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने भी लगभग चार दर्जन ग्रंथों की रचना की। यह अलग बात है कि विद्वानों ने उनके प्रदेय की अधिक चर्चा नहीं की। उनका सटीक और पूरा मूल्यांकन अभी भी शेष है। इसी भावना से इन दोनों लेखों को भी सम्मिलित किया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि बुन्देलखण्ड के साहित्यकार एवं सास्कृतिक परिदृश्य को समझने में यह संग्रह सहायक और उपयोगी सिद्ध होगा।

मेरे सुपुत्र अभिलाष बरसैंया और पौत्री अनन्या तथा पौत्र उत्कर्ष का आग्रह रहा है कि मैं अपने बिखरे लेख समेटकर संग्रह रूप में छपवाऊँ। मैं टालता रहा। वृद्धावस्था कई बार व्यक्ति को उदासीन बना देती है, किन्तु यदि परिजन और शुभेच्छुजन प्रेरित करते रहें तो उदासीनता

बहुत दिनों तक ठहर नहीं पाती। यह संग्रह उसी का परिणाम है। मेरी सभी को शुभकामनायें।

बंधुवर श्री रमेश शुक्ला को धन्यवाद अवश्य देना चाहूँगा, जिन्होंने मेरे संग्रह–प्रकाशन के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। वे वर्षों से मेरे लेखन से परिचित हैं और मेरे प्रति अत्यंत आत्मीय हैं। अन्यथा इस व्यावसायिक युग में ऐसी उदारता दुर्लभ है। संग्रह के शीघ्र प्रकाशन का श्रेय उन्हें ही है।

अंत में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया व पुत्रवधु सौ. रचना बरसैंया को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जो मेरे लेखन के लिये अनुकूल वातावरण बनाने तथा सुविधायें जुटाने में पूरे मनोयोग से लगी रहती हैं।

हिन्दी दिवस
14, सितम्बर, 2014

– डॉ0 गंगाप्रसाद बरसैंया

लघु शोध प्रबंध : लगभग 20 लघुशोध प्रबंध निर्देशन में प्रस्तुत।

संपादन : 'नव–ज्योति', 'राष्ट्रगौरव', 'संज्ञा' व 'बंधु' पत्रिकाओं का संपादन।

सम्मान–पुरस्कार–अलंकार :

1. महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ0 शंकरदयाल शर्मा द्वारा अ0भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य श्री' उपाधि से सम्मानित तथा सम्मेलन द्वारा सर्वोच्च राष्ट्रीय अलंकरण 'भारत भाषा भूषण' व सरस्वती सम्मान ।
2. म0प्र0 लेखक संघ भोपाल का डॉ0 संतोष तिवारी समीक्षा सम्मान व पुरस्कार 2005 में म0प्र0 में महामहिम राज्यपाल डॉ0 बलराम जाखड़ द्वारा अलंकृत।
3. कादंबिनी क्लब जबलपुर म0प्र0 द्वारा अखिल भारतीय 'सेठ गोविंददास पुरस्कार' से अलंकृत।
4. अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'साहित्य वारिधि' अलंकार।
5. लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट, उरई, उ0प्र0 द्वारा 'गौरीशंकर द्विवेदी अलंकरण' एवं पुरस्कार।
6. बांदा जनपद का 'तुलसी पुरस्कार' तथा 'सार्वजनिक अभिनंदन'।
7. वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद्, टीकमगढ़ द्वारा 'बुंदेल वारिधि' सम्मान।
8. बुंदेली विकास संस्थान, बसारी म0प्र0 द्वारा 'राव साहब बुंदेला' सम्मान।
9. हिन्दी प्रचारिणी सभा, कानपुर उ0प्र0 द्वारा 'साहित्य भारती' से अलंकृत।
10. अ0भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा 'विद्रोही' पुरुस्कार से पुरस्कृत।
11. लायंस क्लब छतरपुर द्वारा 'छतरपुर गौरव' सम्मान।
12. आकाशवाणी छतरपुर की सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य।
13. रामायण ट्रस्ट अयोध्या उ0प्र0 द्वारा 'पं0 रामकिंकर' सम्मान।
14. ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा 'मित्र मिश्र अलंकरण' एवं पुरस्कार।

प्रशासनिक अनुभव :

(1) 40 वर्षों तक हिन्दी के आचार्य, विभागाध्यक्ष एवं स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य, (म0प्र0 शासन के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत महाविद्यालीन सेवा)

(2) दो वर्ष तक महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र ओरछा (रीवा वि0वि0) के संचालक (डायरेक्टर)।

स्थायी निवास : 12, एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी, छतरपुर, म0प्र0 – 471001

दूरभाष : 07682–241024,

मोबाइल : 9425376413